'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 12 4 सितम्बर, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

व्यवसायी प्रकोष्ठ के दायित्व सौंपे

श्री क्षत्रिय युवक संघ के पूर्व में गठित प्रकोष्ठों को सक्रिय करने के क्रम में 27 अगस्त को केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में व्यवसायी प्रकोष्ठ की बैठक संपन्न हुई। माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में आयोजित बैठक में संघ के चुनिंदा व्यवसायी स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

हमारे समाज में वर्तमान में अनेक लोग व्यवसाय के क्षेत्र में कार्यरत हैं और अपने प्रयासों से अपना स्वयं का व्यवसाय विकसित किया है। ऐसे लोग संगठित रूप से एक मंच पर आकर सामूहिक प्रयास करें तो समाज के युवाओं की रोजगार की समस्या के हल में सक्रिय सहयोगी हो सकते हैं ऐसे सभी लोगों को संघ से जोड़कर उनके सामाजिक भाव को परिमार्जित कर उनकी समाज में उपयोगिता बढ़ाने के लिए यह प्रकोष्ठ गठित किया गया था। आज की बैठक में उसे क्रियाशील करने का निर्णय लिया गया एवं पुणे में सूचना तकनीक व्यवसाय में संलग्न स्वयंसेवक पवनसिंह बिखरणिया को केन्द्रीय समन्वयक का दायित्व सौंपा गया। इसके अलावा उनके सहयोग के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में 18 क्षेत्रीय समन्वयक बनाए गए। ये सभी लोग अपने सहयोगी व्यवसायियों को इस प्रकोष्ठ के सदस्य बनाएंगे। सदस्यता अभियान के उपरान्त प्रत्येक क्षेत्र में सदस्य व्यवसायियों की कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। इसके अलावा अपने-अपने क्षेत्र के व्यवसायियों में आपसी समझ एवं सामंजस्य बढ़ाने के लिए स्नेहभोज आयोजित किए जाएंगे। व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए सेमिनार आयोजित किए जाएंगे। बैठक में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास, वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी, केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ का भी मार्गदर्शन मिला।

अधिवक्ता प्रकोष्ठ की बैठक

संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में 13 अगस्त को माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में अधिवक्ता प्रकोष्ठ की बैठक रखी गई जिसमें संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेरसिंह गुड़ा, भरतसिंह सेरुणा, अड़िसालसिंह लोहरवाड़ा, डूंगरसिंह गोविन्दगढ़ सहित संघ से जुड़े चुनिंदा अधिवक्ता शामिल हुए।

बैठक में संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह ने अधिवक्ता प्रकोष्ठ के गठन के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि यह प्रकोष्ठ संघ के दर्शन अनुसार समाज के अधिवक्ताओं को सामाजिक कार्यों में अधिकतम उपयोगी बनाने एवं उनमें आपसी सामंजस्य एवं सहयोग बढ़ाने पर जोर देगा। इसके लिए जिला स्तर पर अधिवक्ताओं की कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी। प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक के रूप में राजस्थान हाईकोर्ट जयपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता दिलीप सिंह माधोकाबास को दायित्व सौंपा गया। विभिन्न जिलों से आए अधिवक्ता स्वयंसेवकों ने अपने-अपने जिले के राजपूत अधिवक्ताओं को प्रकोष्ठ के सदस्य बनाने का दायित्व लिया।

आरक्षण की कहानी सचिन शर्मा की जुबानी

हम सभी आरक्षण की दुहाई देते हैं और इसके लिए आंदोलन, धरना, प्रदर्शन एवं दबाव की राजनीति की बातें करते हैं या फिर चाय की थड़ियों पर चर्चा अथवा सभा समारोहों में भाषण देकर इतिश्री कर लेते हैं। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि दबाव की राजनीति कार्यपालिका पर प्रभाव डालती है और कार्यपालिका में बैठे राजनीतिक लोग आरक्षित वर्ग के खिलाफ कुछ भी करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते क्यों कि वे वोटों के भूखे हैं। ऐसे में न्यायपालिका इस अन्याय के खात्मे का सशक्त माध्यम है और उपलब्ध कानूनों की सहायता से ही उचित प्रयास से हम बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। अनेक युवा प्रचार से दूर रहकर अपने सीमित साधनों की सहायता से इस क्षेत्र में प्रयास कर रहे हैं। ऐसे में एक युवा है सचिन शर्मा जिन्हें 2010 में सब इंस्पेक्टर भर्ती में उम्र में छूट पाए ओबीसी के छात्रों के कारण नौकरी नहीं मिल पाई लेकिन उन्होंने निराश होकर व्यवस्था को गालियां देने की अपेक्षा कानूनी लड़ाई लड़ने का फैसला किया और राजस्थान हाईकोर्ट की सिंगल बैंच, डबल बैंच और अंत में सुप्रीम कोर्ट तक संघर्ष कर आखिर 18 अगस्त 2017 को अपने पक्ष में फैसला करवाया। आकाशवाणी जयपुर में

कार्यक्रम अधिशासी के पद पर कार्यरत सचिन शर्मा मूलरूप से जयपुर जिले के गुढ़ा सुर्जन तहसील आमेर के रहने वाले हैं एवं वर्तमान में निवारू रोड झोटवाड़ा जयपुर में रहते हैं। इनके पिता श्री शंभुदयाल शर्मा भारती आयुर्वेदिक एवं मेडिकल कॉलेज, छतीसगढ़ के प्राचार्य हैं और इन्होंने ही इन्हें इतने लंबे एवं खर्चीले संघर्ष में सक्रिय सहयोग दिया। प्रस्तुत है सचिन शर्मा की कहानी उनकी स्वयं की जुबानी....

राजस्थान सरकार के कार्मिक विभाग के एक परिपत्र के कारण सामान्य वर्ग के छात्र अपने से करीब 5 से 10 वर्ष बड़े आरक्षित वर्ग के छात्रों से प्रतियोगी परीक्षा में प्रतिस्पर्धा कर रहे थे और उनके द्वारा आयु में छूट लेकर अधिक आयु का होने के बावजूद उनके हाथों सामान्य वर्ग के छात्र अपनी नौकरियां गवां रहे थे।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

ग्रिगेरियन कैलेण्डर अनुसार 13 अगस्त को मनाई दुर्गा बाबा की जयंती

वीर दुर्गादास राठौड़ की 379वीं जयंती ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार 13 अगस्त को विभिन्न स्थानों पर समारोहपूर्वक मनाई गई। जालोर जिले की सायला तहसील के जीवाणा गांव के बायोसा मंदिर में श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में जयंती समारोह आयोजित हुआ, जिसमें क्षेत्र के सैकड़ों महिला-पुरुषों ने सम्मिलित होकर दुर्गादास जी का स्मरण किया। माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन, मंगलाचरण एवं प्रार्थना के पश्चात् कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक

जीवाणा

देवीसिंह माडपुरा ने कहा कि दुर्गादास जी ने क्षात्र धर्म का पालन करते हुए मानव समुदाय के सामने त्याग एवं तपस्या के आधार पर जीवन जीने का आदर्श रखा है। ईश्वर एवं उनके द्वारा प्रदत्त कर्तव्य के पालन में हमारी निष्ठा के कारण ही हम युगों से धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्र के रक्षक रहे हैं। दुर्गादासजी को उसी चिर-परम्परा के युगानुकूल आदर्श के रूप में हमें देखना है और उनसे समाज-चरित्र की प्रेरणा लेनी है। वरिया मठ के नारायण भारती जी महाराज ने दुर्गादास जी एवं पूज्य तनसिंह जी की तुलना करते हुए कहा कि दोनों ही महापुरुषों ने गीता में वर्णित क्षात्र-धर्म का पूर्णतः पालन करते हुए हमारे सामने अभावों एवं संघर्षों में भी स्वधर्म से न डिगने का आदर्श रखा। कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉ. समरजीतसिंह ने समाज-चरित्र के निर्माण के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को सभी के लिए अनुकरणीय बताया। जालोर उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह सिसोदिया ने उपस्थित युवाओं से आरक्षण व्यवस्था जैसी प्रतिकूलता में भी संघर्ष द्वारा सक्षम बनने का आह्वान किया। कार्यक्रम को जिला परिषद् सदस्य मंगलसिंह सिराणा एवं संघ के मंडल प्रमुख दीपसिंह दूदवा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन गणपतसिंह भंवराणी ने किया। संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने तनसिंह जी रचित 'क्षिप्रा के तीर...' का पठन किया।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़।'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है बाड़मेर जिले की रामसर तहसील के गांव इन्द्रोई की कहानी।

इन्द्र की परियों के नाम से बना 'इन्द्रोई'

गांव 'भदराल' में स्थित तालाब

विश्व विख्यात राजस्थान के खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध केराडू से मात्र 8 किमी दूर पश्चिम में स्थित इन्द्रोई की भौगोलिक दृष्टि से अलग पहचान है। लगभग सन् 1850 में राव सीहोजी के वंशज ठाकुर कांईयोजी ने इस गांव की स्थापना की। इन्द्रोई गांव बाड़मेर जिला मुख्यालय से 50 किमी तथा तहसील मुख्यालय रामसर से 15 किमी की दूरी पर बसा है। कहा जाता है कि पुराने समय में यहां एक सुन्दर नगर बसा हुआ था जो प्राकृतिक उथल-पुथल के कारण नष्ट हो गया था उसके अवशेष आज भी देखने को मिलते हैं। जिसमें मुख्यतः मिट्टी के बर्तन के टुकड़े, कांच के बर्तनों के टुकड़े आदि मिलते है। गांव में एक तालाब है जिसका नाम भदराल है जिसके दोनों और रेत के टीले है। उसके चारों और मरूस्थलीय भूमि व पेड़ पौधे इस प्रकार से लगे हुए है कि दृश्य मनमोहक लगता है। कहते हैं कि इस तालाब पर पुराने समय में इन्द्र की परियां यहां स्नान करने के लिए आया करती थीं। इसलिए इस गांव का नाम इन्द्रोई पड़ा। इस गांव के आसपास के क्षेत्र में पाबूजी की ओरण के कारण इन्द्रोई की अलग पहचान है। बरसात ऋतु में आसपास के लोग इन्द्र देव से प्रार्थना करते हैं कि हमारे गांव से पहले इन्द्रोई में बरसात हो क्योंकि लगभग 5 किमी की परिधी में 10000 बीघा के क्षेत्र में ओरण फैली हुआ है जो आसपास के गांवो के पशुधन को चराने की जगह है।

इन्द्रोई गांव में गायों की संख्या 1500 के आसपास है। प्रत्येक घर में गाय पाली जाती है। इसके अलवा राष्ट्रीय पक्षी मोर, हिरण, नील गाय, सियार आदि जंगली जानवर अच्छी तादात में देखे जाते हैं। मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण सिंचित क्षेत्र नहीं है लेकिन पीने के पानी के लिए गांव में तीन पुराने कुंए हैं। इसके अलावा हैण्डपंप, ओपनवेल आदि साधन हैं जिससे पशुधन व लोगों का जीवन यापन होता है। इन कुओं में एक कुआ राजा सगर के समय का है जिसकी मान्यता है कि राजा सगर हमेशा एक नया कुआ खोदकर उसी का ही पानी पीया करते थे। इन्द्रोई ग्राम पंचायत मुख्यालय है जिसमें लगभग 7-8 राजस्व गांव हैं। स्वतंत्र भारत में गांव के पहले सरपंच ठा. राणसिंह हुए, गांव में सभी जातियों के लोग निवास करते है। मुख्यतः राजपूतों के घरों की संख्या ज्यादा है जिसमें 200 घर खेतसिंगहोत राठौड़, 15 घर गंगदास सोढ़ा, 15 घर दोहट राठौड़, 15 घर परमार, 5 घर राड.भाटी, 4 घर भणकमल भाटी के हैं। इसके अलावा माहेश्वरी, सुथार, भील, रावणा राजपूत व जाट भी निवास करते हैं। भील जाति पाबूजी के पुजारी होने के कारण स्वाभिमानी हैं जिनके स्वाभिमान के अनेक उदाहरण बुजुर्ग बताते हैं। सुथारों की बस्ती में नवदुर्गा मंदिर क्षेत्र में काफी विख्यात है। यहां पर प्रति वर्ष हजारों भक्तगण आते रहते हैं। इस गांव में ज्यादातर लोग कृषि व पशुधन पर निर्भर हैं। लेकिन वर्तमान में युवाओं ने अपनी पहचान की अलग छाप छोड़ी है। कई युवा अरब देशों में अपनी पहचान छोड़ चुके हैं। कई और निजी व्यवसाय में व सरकारी सेवाओं तथा अन्य क्षेत्रों में अपनी पहचान बना चुके हैं। जो अपनी कार्य कुशलता के कारण हजारों युवाओं को रोजगार दे रहे हैं। गांव में एक उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक सामुदायिक सभा भवन तथा एक अटल सेवा केन्द्र है। पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रीय खेल हॉकी में इन्द्रोई की टीम राज्य स्तर पर अपना लोहा मनवा चुकी है।

गांव में होली, दीपावली, आखातीज आदि त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। दीपावली पर ऊंट व घोड़ों की दौड़ देखने की ललक होती है। इन्द्रोई गांव का श्री क्षत्रिय युवक संघ से पुराना नाता है। लगभग 70 वर्षों से बुजुर्ग पूज्य श्री तनसिंह को अच्छी तरह से जानते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ के समय-समय पर शिविर आयोजित होते रहे हैं। गांव में शाखाएं भी अनियमित रूप से लगती रहती है। गांव में छुगसिंह इन्द्रोई, देवीसिंह इन्द्रोई, हिन्दुसिंह इन्द्रोई, जसवंतसिंह इन्द्रोई, नारायणसिंह इन्द्रोई, विक्रमसिंह इन्द्रोई, गेनसिंह इन्द्रोई, रतनसिंह इन्द्रोई, सवाईसिंह इन्द्रोई, जसवंतसिंह द्वितीय आदि संघ के सक्रिय स्वयंसेवक हैं। गांव के ओरण में पेड़-पौधों की कटाई पर पूर्णरूप से प्रतिबंध है। वर्तमान में युवाओं की सोच में बदलाव आया है जिसके कारण कई कुप्रथाएं बंद हुई हैं। इन्द्रोई गांव राजनीतिक दृष्टि से भी एक मजबूत गांव है, वर्तमान सरपंच राजपूत है। अन्य चुनावों के समीकरण में गांव के लोगों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। आजादी से पहले सियाणी व इन्द्रोई एक ही गांव हुआ करते थे जहां के ठाकुर भाखर सिंह जी बड़े योद्धा, अपनी बात के पक्के व वीर पुरुष हुए। जिनकी पहचान दूर-दूर तक थी जो इस दोहे से जाहिर होती है :

'भाखर भड़ बंको, डंकोज सारे देश माय।
सौहज माने शंको, सिंह अग्राजे सिहल रा।।'

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

फुटबोलर चैनसिंह राजवी

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

भारतीय फुटबाल खेल में भुलाया गया परन्तु एक अनोखा खिलाड़ी चैनसिंह राजवी। सत्तर के दशक में भारतीय फुटबाल में जिनका डंका बजता था। आज की पीढ़ी ने यह नाम शायद ही सुना हो। राजस्थान पुलिस आर.ए.सी. की फुटबाल टीम के धुरन्धर खिलाड़ी थे राजवी। बीकानेर जिले के ढीगसरी गांव के राजवी राठौड़ थे आप। आप आर.ए.सी. टीम के कप्तान भी रहे। सत्तर के दशक में राजस्थान की इस फुटबाल टीम का भारत भर में दबदबा था और पत्ते की बात यह कि लगभग पूरी टीम ही राजपूत खिलाड़ियों की थी। चैनसिंह जब मैदान पर उतरते थे तो तालियों की गड़गड़ाहट और हर्षोल्लास के नारों के बीच जैसे फुटबाल पर शेर झपट रहा हो। बिजली की कौंध जैसा उनका हर मूव दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता था। उन्होंने राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय मैच यादगार बनाए। उनके पांव की किक से निकली फुटबाल धुरंधर गोल कीपरों को मात देकर गोली की तरह निकल जाती थी। 1969-70 में दिल्ली में डी.सी.एम. कप फुटबाल टूर्नामिन्ट चल रहा था। आर.ए.सी. का ईस्ट बंगाल कलकत्ता से मैच था। संघर्ष पूर्ण मैच में गोल नहीं हो पा रहा था। ईस्ट बंगाल का अन्तरराष्ट्रीय गोल कीपर पीटर थंगराज जिसके चौकन्नेपन के आगे गोल करना नामुमकिन था। चैनसिंह ने कोई चालीस गज की दूरी से किक लगाया जो गोल कीपर को छकाता हुआ ठीक गोल पोस्ट के अन्दर। गोल कीपर एवं दर्शक सब अवाक रह गए। मुम्बई में रोवर्स कप फुटबाल मैच में मोहन बागान से मैच था। चैनसिंह ने गोली की तरह फुटबाल को किक किया और बॉल गोल पोस्ट की नेट को फाड़कर आरपार हो गई। यह गोल बम्बई को दर्शकों को चमत्कारिक रूप से याद आता रहेगा। 1973-74 में डूरण्ड कप फुटबाल में चैनजी के बल बूते पर उप विजेता रूप में आर.ए.सी. जीती थी। चैनजी एक दशक से ज्यादा तक सन्तोष ट्राफी के लिए राष्ट्रीय फुटबाल चैम्पियनशिप में राजस्थान प्रदेश का लगातार प्रतिनिधित्व करते रहे। इस दौरान उन्होंने अनेक बार विदेशी टीमों के विरुद्ध भी फुटबाल खेला। यह वक्त था जब शार्दुल पब्लिक स्कूल एवं डूंगर कॉलेज बीकानेर सहित आर.ए.सी. टीम बीकानेर का फुटबाल में दबदबा रहा। चैनसिंह के पदचिह्नों पर उनके छोटे भाई एवं प्रख्यात भारतीय फुटबालर मगनसिंह राजवी भी चले। इन दोनों भाइयों ने एक साथ खेलकर देश-विदेश में अपनी धाक जमाई। अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित मगन सिंह राजवी राजस्थान पुलिस टीम (आर.ए.सी.) के साथ-साथ देश की राष्ट्रीय टीम में भी खेले एवं भारतीय फुटबाल टीम के राष्ट्रीय कप्तान रहे। यह राजस्थान एवं समाज के लिए गौरव की बात है। इन दोनों भाइयों की फुटबाल खिलाड़ी जोड़ी एक अन्य राजपूत अन्तरराष्ट्रीय हॉकी महान ओलम्पियन खिलाड़ी भाइयों ध्यानचन्द एवं रूपसिंह की याद दिलाती है।

चैनसिंह राजवी का मात्र 46 वर्ष की उम्र में कैंसर की बीमारी से 13 जनवरी 1990 को स्वर्गवास हो गया अन्यथा यह खिलाड़ी फुटबाल में और कई यादगार आयाम छोड़ जाता। उनकी याद को चिर स्थाई बनाने के लिए राजस्थान आर्मड कोर (आर.ए.सी.) बीकानेर ने अपने फुटबाल स्टेडियम का नाम चैनसिंह स्टेडियम रखा है।

प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

सिलवासा : श्री क्षत्रिय युवक संघ के सूरत प्रान्त का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 16 अगस्त तक सिलवासा में संपन्न हुआ। शिविर के अन्तिम दिन अपने विदाई सन्देश में केन्द्रीय कार्यकारी एवं शिविर संचालक गजेन्द्रसिंह आऊ ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ सामाजिक जीवन में चिंतन और चेतना भरने का मार्ग है। हमने यहां चार दिन अपने आपको सौंपकर जो तत्व पाया है, उसकी बाहर के

विषाक्त वातावरण से रक्षा करनी है, कीचड़ में कमल की भांति रहना है। शिविर में सूरत, मुम्बई, वापी, सिलवासा के प्रवासी राजस्थानी युवाओं ने भाग लिया, जिन्हें अनुशासन, उत्तरदायित्व, कर्तव्य, स्वधर्म आदि की सैद्धान्तिक जानकारी दी गई और व्यवहारिक प्रशिक्षण द्वारा यह अनुभव कराया गया कि हम महान क्षात्र परम्परा के वाहक हैं। शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदान सिंह दौलतपुरा, सूरत प्रान्त प्रमुख खेतसिंह चान्देसरा, रणजीत सिंह आलासन, मनोहर सिंह मिठौड़ा, विक्रमसिंह लीलसर, नाथूसिंह काठाड़ी, बाबूसिंह रेवाड़ा, मनोहर सिंह दुजार, दिलीप सिंह गड़ा आदि स्वयंसेवक सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

सतारा : इसी अवधि में पुणे प्रान्त का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सतारा में आयोजित हुआ। शिविर में मुम्बई, पुणे,

सतारा, पाटन आदि क्षेत्रों के राजपूत युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन मुम्बई प्रान्त प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा ने किया। उन्होंने अपने विदाई सन्देश में शिविरार्थियों से कहा कि संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है, जो उन्हीं की कृपा से संपन्न हो रहा है। यहां इन तीन दिनों में आपने संघ को और संघ ने आपको जाना है। संघ तो आपको याद रखेगा ही पर आप भी भूल मत जाना। शिविर में सहयोगी के रूप में हनुमानसिंह बिखरणियां, पवनसिंह बिखरणियां, मीठूसिंह सिवाणा, रघुनाथ सिंह बेण्यांकाबास, बाबूसिंह, नरेन्द्रसिंह छापरी आदि उपस्थित रहे। सतारा के स्थानीय बंधुओं ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया। इस शिविर में महाराष्ट्र के मूल निवासी क्षत्रिय बंधु भी शामिल हुए।

पचाणवा : जालोर संभाग में आहोर प्रान्त का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर पचाणवा गांव में स्थित आशापुरा कृषि फार्म पर आयोजित हुआ। शिविर 24 अगस्त को स्वागत कार्यक्रम के साथ प्रारम्भ हुआ, जिसमें शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर शिविर संचालक गणपतसिंह भंवराणी ने उनका स्वागत किया। शिविर 27 अगस्त को विदाई कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविरार्थियों को विदाई देते हुए शिविर संचालक ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में सतोगुणीय वातावरण बनाने का प्रयास कर रहा है। हमें अपने भीतरी सतो गुण को प्रबल बनाने का प्रयत्न इन चार दिनों में गीता में वर्णित अभ्यास एवं वैराग्य के मार्ग पर चलकर किया। बाहर जाकर भी हमें इस तत्व का रक्षण करना है, जिससे हम समाज, राष्ट्र एवं मानवता के लिए उपयोगी बन सकें। विदाई कार्यक्रम में शिविरार्थियों के अतिरिक्त आस-पास के एक दर्जन भर गांवों के गणमान्य समाज-बंधु भी सम्मिलित हुए तथा संघ की कार्यप्रणाली को देखा एवं समझा। इस शिविर में बेदाना, मोरुआ, पचाणवा, उम्मेदपुर, मंडला, चरली, हिंगोला, कुआड़ा, उखरड़ा, भंवराणी, देवकी आदि गांवों के 112 राजपूत बालकों ने क्षात्र धर्म एवं संस्कृति का प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्वयंसेवक मदनसिंह थुम्बा, श्रवणसिंह रसियावास, खुमानसिंह दुदिया, संग्रामसिंह देलदरी, खुशवंतसिंह असाड़ा आदि ने शिविर संचालन में सहयोग किया। पचाणवा, बेदाना, अगवरी, मोरुआ, सेदरिया आदि गांवों के समाज-बंधुओं ने शिविर की आयोजन व्यवस्था संभाली।

रानीवाड़ा : जालोर संभाग के सांचौर-रानीवाड़ा प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर राजपूत छात्रावास, रानीवाड़ा

में आयोजित हुआ। शिविर में रानीवाड़ा, जाखड़ी, रतनपुर, डूंगरी, सेवाड़ा, सुरावा, पूरण, जाड़ी, जोड़वास आदि गांवों से लगभग 115 क्षत्रिय युवाओं एवं बालकों ने भाग लिया। पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त मनोवैज्ञानिक प्रणाली द्वारा अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन में शिविरार्थियों ने सामूहिकता की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव किया। शिविर के अन्तिम दिन शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उन्हें विदा देते हुए शिविर संचालक अर्जुनसिंह देलदरी ने कहा कि संघ हमें यह समझाने के लिए प्रयासरत है कि हमें सांसारिक प्रवाह में न बहकर ईश्वर प्रदत्त स्वभाव के अनुकूल अपने स्वधर्म का पालन करना है, इसी में हमारा एवं संसार का कल्याण है। विदाई कार्यक्रम में रानीवाड़ा उपखण्ड अधिकारी हनुमानसिंह राठौड़ तथा विकास अधिकारी प्रकाशसिंह शेखावत भी उपस्थित थे। राठौड़ ने शिविरार्थियों को पश्चिमी अंधानुकरण में न पड़कर अपनी संस्कृति का सम्मान करने का संदेश दिया। इसके पश्चात् सभी ने साथ में भोजन करके आगामी शिविरों में पुनः मिलने के संकल्प के साथ शिविर स्थल से विदा ली। महेन्द्रसिंह कारोला, शक्तिसिंह आशापुरा, फूलसिंह जाखड़ी आदि ने संचालन में सहयोग किया।

बरड़वा में स्नेहमिलन

नागौर संभाग के बरड़वा ग्राम में 20 अगस्त को स्नेहमिलन रखा गया। बरड़वा ग्राम का प्रारम्भ से ही संघ से नाता रहा है। यहां के स्वर्गीय कल्याण सिंह ने वायुसेना की नौकरी के दौरान एवं सेवानिवृत के बाद भी मनोयोग से संघ कार्य किया। उनके बाद नाथूसिंह बरड़वा ने स्वास्थ्य संबंधी प्रतिकूलताओं के बावजूद कार्य चालू रखा एवं गांव के 149 बालकों व 177 बालिकाओं को संघ के शिविर करवाए। स्नेहमिलन में बालक एवं बालिका शाखा पुनः प्रारम्भ करने का संकल्प लिया गया एवं युवा स्वयंसेवक भवानी प्रताप सिंह बरड़वा ने यह जिम्मेदारी ली। नागौर प्रांत प्रमुख उगमसिंह आशापुरा ने शाखा व शिविरों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला वहीं लाडनूं प्रांत प्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी ने आगामी शिविरों की सूचना दी। स्नेहमिलन का संचालन श्यामसिंह छापड़ा ने किया। नाथुसिंह छापड़ा ने वर्तमान में संघ कार्य की विस्तार से जानकारी दी।

शाखा हमारे लिए औषधि

जिस प्रकार एक बीमार व्यक्ति के स्वस्थ बने रहने के लिए औषधि की आवश्यकता होती है वैसे ही हमारे लिए शाखा की नियमितता आवश्यक है। बूठ जेतमाल शाखा प्रांत गुड़ामालाणी में शाखा के स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक रायसिंह उण्डखा ने शाखा निरीक्षण के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि शाखा हमारे जीवन को शारीरिक, वैचारिक, मानसिक सभी प्रकार की बीमारियों से दूर रखती है। इस अवसर पर प्रांत प्रमुख गणपतसिंह बूठ भी उपस्थित थे।

सामपरा शाखा में जन्माष्टमी

गोहिलवाड़ के खोड़ियार प्रांत की सामपरा शाखा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में दही हांडी व गरबा का आयोजन किया गया। शाखा के स्वयंसेवकों के अलावा गांव की बालिकाएं, महिलाएं व बुजुर्ग भी कार्यक्रम में शामिल हुए। स्थानीय स्वयंसेवकों के उत्साहवर्द्धन हेतु मंगलसिंह धोलेरा, घनश्यामसिंह बावड़ी, कृष्णसिंह थलसर व लखदीर सिंह देपला भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

मेवाड़ संभाग की समीक्षा बैठक

भीलवाड़ा में आयोजित बाल शिविर के दौरान 13 अगस्त को मेवाड़ संभाग के स्वयंसेवकों की एक समीक्षा बैठक शिविर स्थल पर केन्द्रीय कार्यकारी विक्रमसिंह इन्द्रोई व संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली के निर्देशन में रखी गई। बैठक में सत्र के प्रारम्भ में लिए गए व्यक्तिगत लक्ष्यों की समीक्षा की गई। अगस्त माह में अजमेर ग्रामीण एवं चित्तौड़ प्रांत में तीन नई शाखाएं प्रारम्भ करना तय किया गया। आगामी तीन माह में आयोजित होने वाले बालक एवं बालिका शिविरों की व्यवस्था एवं संख्या संबंधी चर्चा की गई एवं दायित्व दिए गए। संभाग प्रमुख के निर्देशन में संभाग के जिलों में सम्पर्क यात्रा की रूपरेखा बनाई गई। संघ शक्ति एवं पथप्रेरक के सदस्यता अभियान की समीक्षा की गई। इस दौरान बाल शिविर चलता रहा जिसका संचालन ब्रजराजसिंह खारड़ा ने किया।

आदर्श सीनियर सैकण्डरी स्कूल

सोलंकियातला, तहसील, शेरगढ़, जिला-जोधपुर

- पांचवी, छठी, सातवीं, आठवीं व नवी फेल या पास साक्षर व्यक्ति एनआईओएस बोर्ड से सीधे दसवीं पास करें। 10वीं पास सीधे 12वीं पास करें।
- कोई टी.सी. की जरूरत नहीं, केवल जन्म प्रमाण-पत्र चाहिए।
- उम्र की कोई बाध्यता नहीं, 14 वर्ष से अधिक आयु का कोई भी फार्म भर सकता है।
- B.A., B.Com, M.A., M.A. (योग) व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से 10वीं व 12वीं के प्रवेश चालू हैं।

नोट : सरकारी नौकरी हेतु, पूर्व सैनिकों हेतु, सरपंच, राशन डीलर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी आदि बनने हेतु, ड्राईविंग लाइसेंस बनवाने, राजनीति, बिजनेस, विदेश जाने आदि कार्यों हेतु डिग्री हासिल करने का सुनहरा अवसर।

NIOS Code : 170347 सांगसिंह राठौड़ : 9783202923

संपादकीय

राजनीति और समाजनीति

राजनीति और समाजनीति दोनों पृथक-पृथक विषय हैं। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं एवं दोनों की अपनी सीमाएं हैं। निश्चित रूप से राजनीति समाजनीति से निर्देशित होनी चाहिए लेकिन वर्तमान में इसके विपरीत हो रहा है। राजनीति समाजनीति को ही नहीं बल्कि हर विषय को एक सीमा से बाहर जाकर प्रभावित कर रही है और इसके दुष्प्रभाव चारों ओर असंतुलन के रूप में प्रकट हो रहे हैं। इस असंतुलन को दूर करने के लिए आवश्यक है कि समाजनीति राजनीति को निर्देशित करे और दोनों अपनी सीमाओं में रहकर समाज के लाभ के लिए क्रियाशील होवें। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि राजनीति सम्पूर्ण रूप से समाजनीति में समाहित हो जावे बल्कि दोनों को एक सीमा तक अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से क्रियाशील रहना चाहिए। लेकिन अंतिम रूप से नियंत्रण समाजनीति का ही होना चाहिए। वर्तमान में राजनीति की सर्वथा उपेक्षा करना अव्यवहारिक बात है और आज की राजनीति में राजनीतिक दल राजनीति की प्रमुख धूरी हैं। इसलिए राजनीति करने वाले को या राजनीति में आगे बढ़ने की चाह रखने वाले को किसी न किसी राजनीतिक दल से जुड़ना पड़ता है। वर्तमान भारतीय राजनीति में किसी दल से संबंध जोड़ें बिना आगे बढ़ना कुछ बिरले अपवादों को छोड़कर असंभव सा ही है। ऐसे में राजनीति को अपना क्षेत्र बनाने वाले के लिए यह आवश्यक है कि वह किसी राजनीतिक दल के साथ काम करना प्रारंभ करे। इसके अभाव में उसकी राजनीतिक पारी लंबी नहीं चल सकती। व्यक्ति से आगे यदि हम समाज की बात करें तो उसके लिए भी आवश्यक है कि वह सभी राजनीतिक दलों में अपनी सक्रियता बढ़ाए। किसी दल विशेष का विरोध या किसी दल विशेष का पक्षधर बनकर अंध विरोध या अंध समर्थन वाली छवि किसी समाज के लिए कितनी घातक हो सकती है इसका श्रेष्ठ उदाहरण हमारा समाज है। आजादी के बाद कांग्रेस विरोध को हमने हमारा राजनीतिक ध्येय बना लिया और उसका परिणाम है कि आज कांग्रेस को वोट देने के बावजूद वहां हमारे समर्थन के प्रति निश्चितता दिखाई नहीं देती और कांग्रेस की विरोधी पार्टी यह मानकर चलती है कि हम उनको वोट देने के लिए मजबूर मतदाता हैं। जैसा हमने आजादी के बाद कांग्रेस विरोध दिखाया वैसा ही आजकल कुछ अति उत्साही युवक भाजपा विरोध दिखा रहे हैं। उनके अनुसार भाजपा का पूरे समाज को विरोध करना चाहिए या समाज को उन्हें हराने का अभियान चलाना चाहिए। यह उसी प्रकार की अपरिपक्व सोच है जैसी हमने आजादी के तुरन्त बाद कांग्रेस विरोध के रूप में दिखाई। वास्तव में तो समाज रूप में हमें हमारे विकल्प सदैव खुले रखने चाहिए एवं किसी भी प्रकार के अंधविरोध या अंध समर्थन से बचना चाहिए। आज हमारे समाज का बड़ा हिस्सा भाजपा समर्थित है और उनके समर्थन को किसी आदेश से नहीं बदला जा सकता बल्कि निरंतर जागरण के प्रयास स्वरूप उन्हें अपने विकल्प खुले रखने के लिए तैयार करना हमारी समाजनीति की आवश्यकता है। इसके अभाव में केवल भाजपा विरोध की घोषणा हमारे लिए राजनीतिक रूप से लाभप्रद होने की संभावना नगण्य सी ही है। इसलिए अति उत्साह और जोश में अपरिपक्वता का प्रदर्शन करते हुए किसी के भी एक तरफा विरोध या समर्थन की घोषणा करना राजनीतिक रूप से समाज के लिए हानिकारक है और इससे अधिक हानिकारक सोच हमारे ही समाज के जनप्रतिनिधियों का विरोध करना है। इसलिए आज राजनीतिक रूप से जो जहां है, जिस दल में है उसे वहीं मजबूत बनना चाहिए और समाज को भी उसका सहयोग करना चाहिए यही आज की राजनीति व समाजनीति की मांग है। समाज के घटक के रूप में समाज हर व्यक्ति से अपेक्षा करता है कि वह अपने व्यक्तिगत हित व विचार पर समाज को तरजीह दे। ऐसे में समाज की तरफ से राजनीति करने वाले व्यक्ति के लिए यही आदर्श निर्देशन हो सकता है कि वह व्यक्तिगत रूप से जिस दल से जुड़कर राजनीति कर रहा है उस दल में निष्ठापूर्वक काम करे यही उसके लिए राजनीति की मांग है लेकिन उसके लिए समाजनीति की मांग यह है कि वह जहां है वहां समाज के हितों के लिए काम करे और कभी आवश्यकता पड़े और समाज की सामूहिक शक्ति निर्देशित करे तो समाजनीति के लिए अपनी राजनीति छोड़ने को भी तत्पर रहे। उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति कांग्रेस में है तो कांग्रेस के प्रति निष्ठावान रहकर अपनी स्थिति मजबूत करे और समाज के घटक के रूप में अपने आपको सामाजिक हितों के लिए भी प्रस्तुत करे। लेकिन कभी यदि समाज की अधिकृत सामूहिक शक्ति का निर्देशन कांग्रेस छोड़ने के लिए हो तो उसे भी सहर्ष स्वीकार करे, यही राजनीति और समाजनीति का आदर्श संतुलन है।

पूर्व विधायक को श्रद्धांजलि

जैसलमेर जिले की राजनीति के वरिष्ठ नेता, पूर्व विधायक, पूर्व जिलाध्यक्ष जनसंघ एवं भाजपा, पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष जनसंघ, पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य भाजपा, पूर्व अध्यक्ष केन्द्रीय सहकारी बैंक जैसलमेर सहित विभिन्न पदों पर रहे एवं पूज्य तनसिंह जी के राजनीतिक सहयोगी रहे किशनसिंह भाटी सत्याया की श्रद्धांजलि में जवाहिर राजपूत छात्रावास जैसलमेर में 20 अगस्त को सभा का आयोजन किया गया। राजपूत सेवा समिति के कार्यकारी अध्यक्ष दुष्यंतसिंह की अध्यक्षता में हुई सभा में वक्ताओं ने किशनसिंह जी के देहावसान को समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताते हुए राजनीतिक जीवन एवं सामाजिक जीवन में उनके योगदान का स्मरण किया। जैसलमेर जैसे सीमान्त जिले में राष्ट्रवादी ताकतों वे सदैव सहयोगी रहे। जैसलमेर की सभी सामाजिक गतिविधियों में सदैव उनकी सक्रिय भागीदारी रही। वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में अधिवक्ता साथियों ने उनका स्मरण किया। संघ के जैसलमेर प्रांत प्रमुख नरेन्द्रसिंह तेजमालता, चांधन प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह, विधायक छोटूसिंह, यू.आई.टी. अध्यक्ष जितेन्द्रसिंह, पूर्व विधायक सांगसिंह, एडवोकेट सवाईसिंह, विक्रमसिंह नाचना, तहसीलदार वीरेन्द्रसिंह, नगरपरिषद आयुक्त जब्बरसिंह, उपेन्द्रसिंह आदि ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

कैंसर जागरुकता रैली

सिरोही जिले के वीरवाड़ा के मूल निवासी एवं वर्तमान में नारायण मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल अहमदाबाद में सर्जन के तौर पर सेवाएं दे रहे डॉ. शक्तिसिंह देवड़ा ने 20 जुलाई से 27 जुलाई के बीच उदयपुर से अहमदाबाद तक साईकिल रैली निकालकर लोगों को कैंसर रोग के प्रति जागरुक किया। यह रैली 20 जुलाई को उदयपुर से शुरू होकर नाथद्वारा, राजसमन्द, पाली, सिरोही, पालनपुर, महेसाणा होती हुई 27 जुलाई को अहमदाबाद में कैंसर दिवस पर आयोजित कांफ्रेंस में पूरी हुई। मार्ग में गांवों में रुक-रुक कर डॉ. शक्तिसिंह ने लोगों को कैंसर के प्रारंभिक लक्षणों कारणों एवं बचाव के तरीकों के बारे में जागरूक किया।

खरी-खरी

आदिम युग और इक्कीसवीं सदी

प्रचलित धारणा के अनुसार सृष्टि के आरंभ में मनुष्य आदिम अवस्था में रहता था लेकिन धीरे-धीरे सामाजिकता का विकास हुआ। धीरे-धीरे परिवार नामक संस्था बनी और उस संस्था के कारण सृष्टि को अभूतपूर्व लाभ हुआ। लेकिन व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता के पोषक पश्चिमी समाज में यह परिवार नामक संस्था कभी अपने उत्कर्ष को नहीं पा सकी और इस पर निरन्तर आघात होते रहे। इसी प्रकार का एक आघात है लिव इन रिलेशनशिप जिसके तहत स्त्री-पुरुष केवल और केवल अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति के लिए साथ रहते हैं और परिवार नामक संस्था के कारण उत्पन्न होने वाले दायित्वों से बचना चाहते हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश के पश्चिमोभिमुख लोग भी इस व्यवस्था के समर्थक बने बैठे हैं। इसी कड़ी में विगत दिनों एक दैनिक समाचार पत्र में राजस्थान के महिला आयोग की पूर्व अध्यक्षा लाडकुमारी जैन का एक वक्तव्य छपा जिसमें उन्होंने लिव इन रिलेशनशिप के पक्ष में तर्क देते हुए कहा कि हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं आदिम युग में नहीं। उनके इस वक्तव्य का अर्थ यह निकलता है कि विवाह नामक संस्था आदिम युगीन व्यवस्था है और स्वच्छंद रूप से बिना किसी दायित्व भाव के केवल अपनी व्यक्तिगत कामनाओं की पूर्ति के लिए स्त्री-पुरुष का साथ रहना उनकी नजर में इक्कीसवीं सदी के विकसित समाज की निशानी है। महिलाओं के अधिकारों के नाम पर महिला को भोग की वस्तु मानकर जितनी मर्जी हो तब तक साथ रहना एवं कालांतर में बिना किसी दायित्व बोध के अलग हो जाना तथा इस प्रकार की व्यवस्था को सामाजिक मान्यता प्रदान करना माननीया पूर्व अध्यक्षा की नजर में इक्कसवी सदी के विकसित समाज की निशानी है और इसके विपरीत विवाह नामक संस्था का पक्ष लेकर पारिवारिक भाव के उत्तरदायित्व पूर्ण जीवन को वे आदिम युगीन जीवन मानती हैं। हलांकि आदिम युग की धारणा कितनी तर्क संगत है यह अलग बात है लेकिन फिर भी प्रचलित अवधारणा को स्वीकार करें तो भी आदिम युग उसे कहा जाता है जब मानव जंगलों में स्वच्छंद रूप से रहता था, मिलने पर भोजन कर लेता था एवं पशुवत व्यवहार करते हुए जंगल में विचरण करता था। न कोई विवाह होता था और ना ही कोई परिवार। पशुओं में जिस प्रकार का स्वच्छंद जीवन होता है और विशेष रूप से नर और मादा के जैसे स्वच्छंद संबंध होते हैं, कुछ-कुछ वैसे ही संबंध आदिम युगीन व्यवस्था में माने जाते हैं। लगभग वैसा ही व्यवहार लिव इन रिलेशनशिप में पाया जाता है बस आदिम युगीन मानव कपड़े नहीं पहनता था आज का मानव पहनता है। उस समय का मानव पेड़ों के जंगल में रहता था और आज इस प्रकार की सोच का प्रतिनिधि मानव कंक्रीट के जंगल में रहता है। विडंबना यह है कि इस प्रकार के व्यवहार को विकास बताया जा रहा है। आदिम युगीन सोच को तो इक्कीसवीं सदी की सोच बताया जा रहा है और तथाकथित आदिम युग से निकलकर शनैः शनैः हजारों वर्षों के निरन्तर विकास स्वरूप पनपी सामाजिक व्यवस्था को आदिम युगीन बताया जा रहा है। इससे भी अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि इस प्रकार का तर्क उन अध्यक्ष महोदया द्वारा दिया जा रहा है जिन्हें कभी महिला अधिकारों की रक्षक की भूमिका सौंपी गई थी।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**सगरां**, देचू से 3 किमी दूर, जिला-जोधपुर।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बूढेश्वर महादेव, **भूतगांव** (सिरोही)। जावाल से 4 किमी दूर।
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	संस्कृत विद्यालय, **सिवाड़ा**। धोरीमन्ना-सांचौर रोड पर स्थित।
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	आशापुरा माता मंदिर, **नाडोल**। रानी, पाली, देसूरी, सादड़ी, बाली से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ। पाली-उदयपुर मेगा हाईवे पर स्थित।
5.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**करगचिया** (घाटोल) बांसवाड़ा-जयपुर नेशनल हाईवे 113 से 2 किमी अन्दर।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**वणवासा** (डूंगरपुर) साबला-विजवामाता जी रोड पर आसपुर।
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	नागणेच्या मंदिर, **जालेला** (बाड़मेर) शिव से जालेला पहुंचे।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**धनवा** (संत भोलाराम जी मंदिर)। मिठोड़ा-सिणधरी रोड पर।
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**थोब** (कीकाजी बावजी का मंदिर)। बालोतरा-शेरगढ़ मेगा हाईवे पर स्थित।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**पारासरा**। फलसूंड व पोकरण से सुबह 7 बजे से हर घंटे बस, बाड़मेर से बस।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**बीठे का गांव,** नाचना से बीकमपुर, बीकमपुर से नोख या पोकरण फलोदी से बाप, बाप से नोख हर घंटे बस उपलब्ध।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**बैनाथा,** तहसील बीदासर (चूरू)।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	**सनाई**। जोधपुर से धुंधाड़ा मार्ग पर स्थित है।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.09.2017 से 24.09.2017	**बड़ला बासनी** (जोधपुर)। तिंवरी से 15 किमी दूर।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.09.2017 से 24.09.2017	**मेलूसर** (चुरू), सरदारशहर व रतनगढ़ से रेल सेवा।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.09.2017 से 24.09.2017	जागनाथ महादेव मंदिर **नारणावास** (जालोर) जालोर व बागरा से बस उपलब्ध।
17.	मा.प्र.शि. (बालिका)	27.09.2017 से 03.10.2017	कल्ला रायमलोत बोर्डिंग हाउस, **सिवाणा** (बाड़मेर)।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	सारुण्डा, नोखा से करणू-चाडी मार्ग पर स्थित।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**जोधियासी**, नागौर।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**खानपुर** (नागौर), लाडनूं सुजानगढ़ मार्ग पर स्थित।
21.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	आयुवान निकेतन, **कुचामन सिटी** (नागौर)।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**केकड़ी** (अजमेर)। सम्पर्क सूत्र : विजयराजसिंह जालिया 9602246116 पृथ्वीसिंह सांपणदा : 7742666287
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	एकलिंग नाथ मंदिर, **भीमाणा** (सिरोही) स्वरूपगंज आबूरोड मार्ग पर भीमाणा बस स्टैण्ड उतरें।
24.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	भोपालसिंह जी का कृषि फार्म **राउता** (जालोर) बागोड़ा गुड़ामालानी सड़क मार्ग पर बागोड़ा से 7 किमी राऊता।
25.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	पाबूजी का मंदिर **महाबार** (बाड़मेर)।
26.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**जयसिंधर** (बाड़मेर) गडरारोड से बस उपलब्ध।
27.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**भैंसड़ा** (जैसलमेर)। पोकरण से बस उपलब्ध। झिंझनियाली, फतेहगढ़, जैसिंधर से भी उपलब्ध।
28.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**सोनू** (जैसलमेर)। रामगढ़ जैसलमेर मार्ग पर स्थित।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। **राजेन्द्रसिंह बोबासर,** शिविर कार्यालय प्रमुख

बरस बरस रे बादली

अन धन दीजै ईसरी, सुख सम्पत अर शान।
करसा रहसी कोड सूं, उपजै सातूं धान।।
बरस बरस रे बादली, मगरा धोरां मांय।
रळियाणा सह रुंखड़ा, हरियाळा हरसाय।।
बरसण मधरी बादळी, अब थूं बैगी आव।
आज उतारूं आरती, दे थारौ दरसाव।।
झाला देवै झूंपड़ा, मरु भौम री माट।
वैगी आजै बादळी, जोवां थारी बाट।।
मौळो दीसै मांनखौ, मौळो मुरधर देस।
बरस गरज नै बादळी, करण सुरंगो वेस।।
बरसै वैगी बादळी, राखण मुरधर लाज।
बळती दीसै बाजरी, पीळा पड़गा पांन।।
करसा जोवै कोड सूं, आभै कांनी आज।
मत तरसा अब मेघ तूं, रख मुरधर रौ मान।।
बरस बरस रे बादळी, धोरां धरती धोर।
आज पुकारे आपने, मुरधर करसा मोर।।
तपती मांही तरसिया, अन धन आठूं पौर।
बरस बरस रे बादळी, हिंवड़े भरण हिलोर।।
बळे बाजरी बापड़ी, सांभळ लेवौ सार।
बरस बरस रे बादळी, करसा करै पुकार।।
तपै मांनखो तावड़ै, तन मन सब तरसाय।
बादळ मुरधर बरसतां, हिंयो घणो हरसाय।।
हुवै जमानो जोर रो, सखरी पाकै साख।
सुख सूं रेवै सुरभियां, इत पर अंजस राख।।

मदनसिंह सोलंकियातलां

सामाजिक भाव के आदर्श उदाहरण

समाज हमारा परिवार है और यह परिवार तब तक रहता है जब हम समाज के लोगों के सुख-दुःख में भागीदार बने रहें। हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हमारे समाज में ऐसा सामाजिक भाव प्रचूर मात्रा में है, यह दीगर बात है कि इसके विरोधी गुणों की अतिसक्रियता के कारण यह दब जाता है। फिर भी जब-जब आवश्यकता होती है यह प्रकट होता है। ऐसा ही अभी आनंदपाल मामले में मारे गए दो बंधुओं के प्रति देखा गया। मालासर के सुरेन्द्रसिंह के परिवार की सहायतार्थ अनेक युवाओं ने वाट्सएप समूहों में अभियान चलाकर आर्थिक सहयोग एकत्र किया और उस परिवार को अहसास करवाया कि आपका पुत्र पूरे समाज का पुत्र था। ऐसा ही गुजरात के बनासकांठा के सूई गांव के रावणा राजपूत बंधु के सहयोग के लिए किया गया। अभी हाल ही में एक वाट्सएप समूह द्वारा दो लाख रुपए एकत्र कर उसके बड़े भाई को दिए। स्वयं संघर्ष कर कहीं न कहीं कमाने लायक बने युवा साथियों में यह भावना अधिक देखी जा रही है क्योंकि उन्होंने स्वयं ने अभावों का दर्द सहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारा यह सामाजिक भाव इसके प्रतिगामी भावों स्वार्थ, अहंकार, ईर्ष्या आदि का शिकार न बने और इसके लिए निरन्तर अभ्यास एवं जागृति की आवश्यकता है।

राजपूत सभा ओसियां की इकाई का गठन

13 अगस्त को राजपूत सभा ओसियां के पदाधिकारियों द्वारा डिगाड़ी एवं जेलु गांव का दौरा कर दोनों गांवों की इकाई का गठन किया गया। दोनों जगह उपस्थित समाज बंधुओं को सभा के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। दोनों ही स्थानों पर सामाजिक कुरीतियों एवं नशे की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने का निर्णय लिया गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141-4015747
website : www.springboardindia.org

सामूहिक शाखाओं का आयोजन

जैसलमेर : शहर में लगने वाली विक्रमादित्य शाखा, भोजदेव शाखा, तनाश्रम शाखा, मातेश्वरी शाखा, भटियाणी शाखा, राजपूत छात्रावास शाखा आदि शाखाओं की सामूहिक शाखा 20 अगस्त को श्री जवाहिर राजपूत छात्रावास प्रांगण में लगाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख नरेन्द्रसिंह तेजमालता ने बताया कि दैनिक शाखा हमारी दिनचर्या में निखार लाती है। चांधण प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह ने सहगीत करवाया। विभिन्न पथक बांट कर खेल खेले गए एवं उन पर चर्चा की गई। विगत जुलाई माह में ऐसा आयोजन संघ के संभागीय कार्यालय तनाश्रम में रखा गया था। जिस शहर में एक से अधिक शाखाएं लगती हैं वहां ऐसा आयोजन होता है।

बाड़मेर : बाड़मेर में 20 अगस्त को राजपूत सभा भवन गांधीनगर (बाड़मेर) में सामूहिक शाखा का आयोजन किया गया जिसमें गांधीनगर कॉलोनी की मोहन गुरुकुल छात्रावास, एम.एन. हॉस्टल, मरुधर छात्रावास, मातेश्वरी छात्रावास, मोहन विद्यापीठ, जयभवानी छात्रावास सहित विभिन्न शाखाओं के स्वयंसेवक शामिल हुए। स्वयंसेवकों को चार पृथकों में बांट कर अलग-अलग शिक्षकों के नेतृत्व में खेल, सहगीत एवं चर्चा की गई। सामूहिक शाखा का संचालन भगवानसिंह दूधवा, नटवरसिंह झिंझनियाली व प्रेमसिंह भियाड़ द्वारा किया गया। शाखा में कुल 180 स्वयंसेवक शामिल हुए।

बाड़मेर शहर प्रांत के दानजी की होदी मंडल की आदर्श छात्रावास, कृष्णा छात्रावास तनाश्रय छात्रावास, राजपूत छात्रावास एन.एच. 68 सहित सभी शाखाओं का सामूहिक कार्यक्रम 27 अगस्त को रखा गया जिसमें प्रांत प्रमुख महिपालसिंह चूली ने ऐतिहासिक सहगायन पर चर्चा की एवं इतिहास की विभिन्न घटनाओं के माध्यम से वर्तमान के लिए निर्देशन के बारे में बताया। शाखा का संचालन मंडल प्रमुख भगवानसिंह दूधवा ने किया। इस कार्यक्रम में सभी शाखाओं के 160 स्वयंसेवक शामिल हुए।

धोलेरा परिवार शक्तिधाम में

गुजरात में अहमदाबाद जिले का धोलेरा गांव संघ मय है। यहां अनेक शाखाएं लगती हैं। गांव के वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलरा स्थायी रूप से सुरेन्द्र नगर स्थित संघ कार्यालय 'शक्तिधाम' में निवास करते हैं। जन्माष्टमी के अवसर पर धोलेरा का संघ परिवार अपने वरिष्ठतम सदस्य का सानिध्य पाने 'शक्तिधाम' पहुंचा एवं सभी ने यज्ञ कर भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण दिवस मनाया।

पूर्व विधायक किशनसिंह का देहावसान

पूर्व विधायक एवं जैसलमेर के ख्यातिनाम सामाजिक कार्यकर्ता किशनसिंह भाटी सत्याया का 14 अगस्त को देहान्त हो गया। वे जैसलमेर से जनता पार्टी के विधायक रहे। भारतीय जनता पार्टी के लंबे समय तक जिलाध्यक्ष रहे। इसके अतिरिक्त जैसलमेर की सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय रहे। राजनीतिक रूप से अपने प्रारंभिक दिनों में पूज्य तनसिंह जी के जैसलमेर में निकटतम सहयोगी रहे। उनके देहावसान से जैसलमेर के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में बड़ा स्थान रिक्त हो गया है।

थराद में स्नेहमिलन

गुजरात के बनासकांठा क्षेत्र के थराद में 27 अगस्त को स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें प्रो. ईश्वरसिंह ढीमा ने कहा कि संघ अनगढ़ पत्थर को मूर्ति बनाता है। जालोर संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने कहा कि संघ संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा व्यक्तित्व निर्माण कर रहा है। पूज्य तनसिंह जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचा कर संघ उसका प्रसार कर रहा है। सांचौर प्रांत प्रमुख शक्तिसिंह आशापुरा ने बालिका शिविरों का महत्त्व बताया। डूंगरसिंह चारड़ा ने क्षेत्र में आगामी दिनों में लगने वाले शिविरों की जानकारी दी। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह कुणघेर ने संचालन करते हुए संघ का परिचय दिया।

राठौड़ को दूसरी बार मिला राष्ट्रपति पुरस्कार

जोधपुर जिले के देणोक निवासी एवं वर्तमान में पाली में रह रहे होमगार्ड के पूर्व डिप्टी कमांडेंट भंवरसिंह राठौड़ को विगत स्वतंत्रता दिवस पर दूसरी बार राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया है। इससे पहले 2003 में भी वे इसी पुरस्कार से नवाजे जा चुके हैं। वे अभी हाल ही में बोर्डर होमगार्ड बीकानेर के डिप्टी कमांडेंट पद से सेवानिवृत्त हुए हैं।

मूलराजसिंह बने मैच कमिश्नर

गुजरात के भावनगर फुटबाल एसोसिएशन के सेकेट्री रहे मूलराजसिंह चुड़ासमा हाल ही में आयोजित ऑल इंडिया फुटबाल फेडरेशन की परीक्षा पास कर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मैच के कमिश्नर बने हैं।

दुःखद अवसान

संघ के स्वयंसेवक ईश्वरसिंह आऊ के

दादीसा श्रीमती जेठी कंवर का 93 वर्ष की उम्र में 11 अगस्त को देहावसान हो गया। ईश्वर इन्हें अपने चरणों में स्थान देवे।

स्वतंत्रता दिवस पर सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अनेक समाज बंधु विभिन्न स्तरों पर सम्मानित किए गए। लगभग हर जिले के जिला स्तर एवं ब्लॉक स्तर पर सम्मानित होने वाले लोगों में समाज बंधुओं ने अपना स्थान बनाया। जैसलमेर के राउमावि कोटड़ी के व्याख्यता तनेसिंह काठा को विद्यालय में उत्कृष्ट कार्य, नामांकन वृद्धि एवं शिक्षण में रचनात्मक नवाचारों के लिए जैसलमेर जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया। मुंबई की उल्लासनगर शाखा के स्वयंसेवक जेतमालसिंह हरसाणी को हाल ही में अतिवृष्टि के दौरान बिशाला में हुए हादसे में तत्परता से सहायता जुटाने के लिए बाड़मेर जिला प्रशासन ने सम्मानित किया। ग्रामीण विकास योजनाओं में विशिष्ट कार्य के लिए पंचायत प्रसार अधिकारी रूपसिंह परेऊ को बालेसर उपखण्ड प्रशासन द्वारा एवं सायला में पदस्थापित अध्यापक अमरसिंह चांदणा को उत्कृष्ट विभागीय कार्य के लिए सायला उपखण्ड प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया। पत्रकार कुम्भसिंह बस्तवा को श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए बालेसर उपखण्ड प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया।

पुलिस उपाधीक्षक की विदाई

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक बलदेवसिंह भैंसाणा पुलिस उपाधीक्षक मांगरोण जिला जुनागढ़ (गुजरात) का स्थानांतरण ऊर्जा विभाग बड़ौदा में हुआ। सांप्रदायिक तनाव की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र मांगरोण में अपनी नियुक्ति के दौरान बिना किसी दबाव के बलदेवसिंह ने शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने में उल्लेखनीय योगदान दिया। स्थानांतरण के समय उनकी विदाई में क्षेत्र के सभी वर्गों ने उपस्थित रहकर उनकी सेवाओं का सम्मान किया।

मायथी जी जुझार स्मृति समारोह की तिथि तय

रामगढ़ क्षेत्र के जुझार मायथीजी के स्मृति समारोह को लेकर 30 अगस्त को रामगढ़ के राजपूत छात्रावास में एक बैठक रखी गई जिसमें 18 फरवरी 2018 को जुझार की स्मृति में समारोह श्रीमायथी जी जुझार डूंगरी मंदिर (आईडीएमएम) पर मनाए जाने का निर्णय किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के रामगढ़ प्रांत के तत्वावधान में मनाए जाने वाले समारोह के संयोजक का दायित्व पूनमसिंह नेतसी को सौंपा गया एवं हमीर सिंह रामगढ़ के नेतृत्व में एक समिति बनाई गई जो रियासत कालीन ग्रन्थों एवं साहित्य से मायथी जी से संबंधित तथ्यों का संकलन करेगी।

विधायक कीर्ति कुमारी का निधन

भीलवाड़ा के मांडलगढ़ की विधायक कीर्ति कुमारी बिजोलिया का 28 अगस्त को जयपुर में स्वाईन फ्लू नामक बीमारी से देहांत हो गया। वे 2013 में मांडलगढ़ से विधायक बनी। इससे पहले कृषि उपज मंडी की अध्यक्षा रहीं एवं भाजपा संगठन में विभिन्न पदों पर रहीं। उनके निधन से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर छा गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

ग्रिगेरियन कैलेण्डर..

कार्यक्रम में भवानी सिंह बाकरा, आहोर प्रधान राजेश्वरी कंवर, पोषाणा सरपंच परबतसिंह राठौड़, भीमसिंह बावतरा, छैलसिंह, उत्तमसिंह जीवाणा, विजयसिंह दूदवा, भवानीसिंह भटाणा, राजवीर सिंह नोसरा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। बाड़मेर संभाग के गुड़ामालानी प्रांत के बूठ जैतमाल गांव में 13 अगस्त को दुर्गादास जयंती मनाई गई। पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित सहगीत 'मेरे वीर दुर्गादास लौट के आ रे...' के साथ दुर्गादास के जीवन चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्हीं की भांति क्षात्र-धर्म का पालन करना हमारा भी कर्तव्य है। प्रांत प्रमुख गणपतसिंह बूठ ने कहा कि दुर्गादास जी की ही तरह गीता में वर्णित क्षत्रिय के सातों गुणों को हमें धारण करना चाहिए। वर्तमान में इन गुणों को समझने एवं इनके अभ्यास का श्रेष्ठतम मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमारे सामने है। श्री हरीसिंह उण्डखा द्वारा 'क्षिप्रा के तीर...' का पठन किया गया। कार्यक्रम में नरपतसिंह, जालमसिंह, भीमसिंह, रणवीर सिंह, विक्रमसिंह, रायसिंह उण्डखा, जोगराज सिंह, स्वरूपसिंह, धनसिंह, सरदारसिंह, रामसिंह, हिन्दू सिंह, जसवंतसिंह, मल्लसिंह बूठ आदि सम्मिलित थे।

समदड़ी के टाउन हॉल में राजपूत सेवा समिति के तत्वावधान में दुर्गादास जयंती का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ दुर्गादासजी की तस्वीर के सामने दीप प्रज्वलन से हुआ, तत्पश्चात वीर शिरोमणी को पुष्पांजलि दी गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक अमरसिंह अकली द्वारा 'क्षिप्रा के तीर...' का वाचन किया गया। राणसिंह टापरा ने दुर्गादासजी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। सभी की भावनाओं से सहमति जताते हुए सिवाणा विधायक हमीरसिंह ने कस्बे में दुर्गादास जी की प्रतिमा स्थापित करवाने का आश्वासन दिया। पूर्व विधायक कानसिंह कोटड़ी, श्रीमाली पटेल, डॉ. गणपतसिंह राठौड़, नटवर करण तथा तहसीलदार सुरेन्द्रसिंह खंगारोत ने भी समारोह को संबोधित किया। मंच संचालन हुकमसिंह अजीत ने किया। कार्यक्रम में समदड़ी तथा आसपास के गांवों कांकराला, सिवाणा, बालोतरा आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में समाज बंधुओं ने भाग लिया। राजपूत छात्रावास डीडवाना में आयोजित जयंती कार्यक्रम में दुर्गादासजी के जीवन से संघर्ष एवं त्याग की प्रेरणा लेने की बात वक्ताओं ने कही, साथ ही उपस्थित सामाजिक नेताओं ने सरकार की अन्यायपूर्ण नीतियों पर जमकर रोष प्रकट किया तथा इसका उत्तर आगामी चुनावों में एक होकर देने का आह्वान किया। कार्यक्रम को प्रतापसिंह खाचरियावास, गिरीराज सिंह लोटवाड़ा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दीपेन्द्रसिंह शेखावत, पूर्व सांसद गोपालसिंह ईड़वा, महिपालसिंह मकराना, हनुमानसिंह खांगटा आदि ने संबोधित किया। पाली जिले में बिरामी गांव में दुर्गादासजी की जयंती मारवाड़-गोडवाड़ सेवा समिति के तत्वावधान में मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दिलीप सिंह करणोत ने कहा कि दुर्गादास एक ऐसे देशभक्त थे जिन्होंने अपना सर्वस्व देश हित में समर्पित कर दिया और जीवन भर संघर्ष करते रहे। कार्यक्रम को जयदेव सिंह राणावत एवं प्रभुसिंह राणावत ने भी संबोधित किया। जैतारण स्थित राजपूत सभा भवन में दुर्गादास जी की जयंती वीर दुर्गादास राठौड़ क्षत्रिय सभा जैतारण-रायपुर के तत्वावधान में मनाई गई। समारोह की अध्यक्षता मानवजीत सिंह रायपुर ने की। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रतिनिधि के रूप में शिवसिंह ढूंढ़ा उपस्थित रहे। कवि हिम्मतसिंह कविया ने दुर्गादास जी के शौर्य एवं चरित्र की महानता का वर्णन अपनी ओजस्वी कविताओं से किया। इस अवसर पर भगवतसिंह मोहरा, भगवतसिंह निमाज, अमरजीतसिंह राठौड़, चैनसिंह बलाड़ा, राजेन्द्रसिंह डिगरना, मोहब्बत सिंह निम्बोल, हरजीतसिंह निमाज, ओंकारसिंह निम्बेडाकलां, श्यामसिंह आकोदिया सहित समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। जोधपुर के जीयाबेरी गांव में बालाजी मंदिर के पास दुर्गादास जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कानाराम प्रजापत व डॉ. भोजराजसिंह ने दुर्गा बाबा की जीवनी से युवाओं को परिचित करवाते हुए कहा कि दुर्गा बाबा की तरह निःस्वार्थ भावना से काम करने वाले लोगों की वर्तमान समय में आवश्यकता है। इस मौके पर मदनसिंह दइया, अर्जुन प्रताप सिंह इंदा, नरपतसिंह राठौड़, जसवंतसिंह, भगाराम, भगवानसिंह सहित अनेक ग्रामवासी उपस्थित थे। दिल्ली के छतरपुर स्थित मार्कण्डेय भवन में दुर्गादास जी की जयंती के अवसर पर स्नेहमिलन रखा गया, जिसमें राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश के राजपूत बंधुओं ने भाग लिया। मंगलाचरण एवं प्रार्थना के पश्चात् 'क्षिप्रा के तीर...' का वाचन किया गया। इसके पश्चात् दिल्ली में नई शाखाओं के प्रारम्भ एवं शिविर के आयोजन पर चर्चा हुई। भाखरी में वीरवर दुर्गादासजी की 379वीं जयंती उम्मेदसिंह की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में भाखरी, ढेलाणा व दुर्गादास नगर के अनेकों लोगों ने भाग लिया। सीकर स्थिति दुर्गा महिला विकास संस्थान में स्थानीय बालिकाओं व सहयोगियों ने वरिष्ठ स्वयंसेवक रतनसिंह नंगली के सानिध्य में जयंती मनाई।

आरक्षण की...

इसी कारण राजस्थान पुलिस सिपाही भर्ती-2010 में सामान्य वर्ग के छात्र का चयन सामान्य वर्ग के पदों पर ही मात्र 0 से 8 प्रतिशत हो रहा था। उसके बाद राजस्थान पुलिस सब-इंस्पेक्टर भर्ती 2010 में सामान्य वर्ग के छात्रों का प्रतिशत सम्पूर्ण पदों में लगभग 8-10 प्रतिशत रहा। इस मामले में छात्रों ने आंकड़ों सहित सरकार को अवगत कराने के लिए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी से सम्पर्क किया और संघशक्ति के द्वारा इन सब बातों से सरकार को अवगत कराने के लिए सभी आंकड़ों सहित पत्र लिखे गए, छात्रों ने व्यक्तिगत रूप से भी सभी संवैधानिक मान्यताओं की दुहाई देते हुए पत्र लिखे और बारम्बार प्रार्थना की गई जिसे सिरे से खारिज कर सरकार ने अपने सर्वथा अनुचित परिपत्र के द्वारा एक प्रकार से करीब 90 प्रतिशत तक आरक्षण आरक्षित वर्गों को देकर सामान्य वर्ग के छात्रों को बेरोजगारी के दलदल में धंसने पर मजबूर कर दिया। मजबूरन छात्रों ने राजस्थान हाइकोर्ट की सिंगल बैंच में वर्ष 2013 में याचिका दायर की और उसमें जीत हासिल की। खुशी के पल पूरी तरह आए भी नहीं थे कि सरकार ने और विभाग ने ही नहीं बल्कि आरक्षित वर्ग के छात्रों ने एकजुट होकर इस फैसले के खिलाफ राजस्थान हाईकोर्ट में डबल बैंच में अपील कर सामान्य वर्ग के छात्रों के हितों को छीनने का भरपूर प्रयास किया और बड़े से बड़े वकील उतारे गए, मुट्ठी भर सामान्य वर्ग के बेरोजगार छात्रों के पास उतनी पूंजी और कानूनी ज्ञान का अभाव था और अन्ततः खामियाजा सरकार के खिलाफ केस हारकर चुकाना पड़ा।

जैसा कि हमेशा होता आया है, सामान्य वर्ग के छात्रों में आपसी फूट और मतभेद के कारण और स्वयं की आर्थिक अक्षमता तथा सामान्य वर्ग के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से सक्षम लोगों की खुद के समाज और वर्ग के भविष्य के प्रति उदासीनता के कारण सुप्रीम कोर्ट में जाने का साहस अब बेरोजगारी से पीड़ित छात्रों में नहीं बचा था। माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने खुद समाज और सामान्य वर्ग के अन्य गणमान्यों को इस समस्या से अवगत कराया परन्तु उदासीनता यथावत रही लेकिन उनकी निरन्तर प्रेरणा, भावनात्मक और नैतिक रूप से दी गई मजबूती ने कुछ छात्रों में अब भी लड़ने का जज्बा खत्म नहीं होने दिया और वर्ष 2014 में उनकी प्रेरणा से सुप्रीम कोर्ट में 2 याचिकाएं और 2015 में एक और याचिका राजस्थान में आरक्षण की अमरबेल के दुष्प्रभावों को कोर्ट के सामने रखने के लिए लगाई गई जिसमें बड़े वकीलों के नाम नहीं थे लेकिन कड़ी मेहनत से तैयार आंकड़े प्रस्तुत किए गए जो कि विभिन्न विभागों से सूचना के अधिकार से लिए गए, सरकारी वेबसाइट से लिए गए। बोर्ड परीक्षा मेरिट से लेकर सब-इंस्पेक्टर 2010, कांस्टेबल परीक्षा 2010 व 2013, कर्मचारी चयन आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राजस्थान लोक सेवा आयोग आदि की परीक्षाओं, राजस्थान निर्वाचन विभाग के आंकड़ों आदि से परिपूर्ण कर मजबूत लड़ाई लड़ी गई जिसका परिणाम 18 अगस्त 2017 को मिला और सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आयु में छूट लेने वाले आरक्षित वर्ग के छात्रों को सामान्य वर्ग के पदों पर चयनित करना गलत था और याचिकाकर्ताओं को अब नियुक्ति दी जाए।

वैसे ये तो सिर्फ 2013 से 2017 तक 4 साल में हो गया लेकिन दूसरी नजर से देखा जाए तो करीब 52 महीने या करीब 1600 दिन लगे। हर दिन सिर्फ अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर आंकड़े जुटाए गए। हम सब जानते हैं कि हमारे साथ गलत हो रहा है लेकिन इसे चाय की थड़ी पर कहने की जगह तथ्यों के साथ कोर्ट में कहा जाए तो फर्क पड़ेगा, अपने प्रयासों की जानकारी और आंकड़ों को एक जगह इकट्ठा कर डाटाबेस बनाएं ताकि एक-दूसरे के काम आ सके। तभी सूरत बदलेगी। अगर हमने ये जिम्मेदारी नहीं उठाई तो हमारी आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी क्योंकि हम सब जानकार भी अनजान बने हैं और समर्थ होकर भी सामर्थ्य का उचित उपयोग नहीं कर रहे। अब जमाना सिर्फ बातों का नहीं है। हमे श्रेय लेने की होड़ और आपसी रस्सा-कसी से ऊपर उठकर व्यापक हित में सोचना होगा, सिर्फ खुद को स्वयंभू ज्ञानी मानने की जगह खुद से हर बड़े और हर छोटे को सुनना होगा तभी हम जान पाएंगे कि क्या-क्या समस्या हमारे समाज और सामान्य वर्ग के सामने सुरसा सा मुख फाड़े खड़ी है। इन सबसे निजात पाने का एक ही तरीका है कि हम अपने आंख, कान खुले रखें और हर अन्याय के खिलाफ उठ खड़े हों, ये मानकर की असंभव जैसी कोई चीज है ही नहीं और सुप्रीम कोर्ट में इस मामले में सरकार के खिलाफ और आरक्षित वर्गों के खिलाफ जीत कर हमारे मुट्ठी भर युवाओं ने ये कर के भी दिखाया है। हमारे समाज और सम्पूर्ण सामान्य वर्ग को यहां से सोचना होगा कि हम वक्त पर आखिर क्यों पीछे हट जाते हैं, निजी या सामाजिक कार्यक्रमों में कुछ कमी कर लें पर ऐसे कार्यों में आगे बढ़कर हर संभव मदद करें जो हमारी भावी पीढ़ियों को मजबूत बनाने की दिशा में हो। ये जो खुशी भरा दिन आया है इसके पीछे गर्मी-सर्दी-बरसात की परवाह किए बिना 4 साल की दिन-रात की सार्थक और सटीक मेहनत, बड़ों का मार्गदर्शन और आशीर्वाद और असंभव से भिड़ जाने का जज्बा है, उम्मीद है कि हमारा हर एक नौजवान ऐसे कार्य करने को उद्यत रहेगा और समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति उनका अब सहयोग करने में कोई बहाना आड़े नहीं आने देंगे, क्योंकि हमारी एकता ही हमारी विजय की शुरुआत है।

सचिन शर्मा का कहना है कि इस आदेश के विरुद्ध यदि सुप्रीम कोर्ट में दुबारा याचिका लगती है और फैसला यदि खिलाफ भी आता है तो इसमें लगभग 4-5 वर्ष लगेंगे और तब तक हमारे हजारों युवाओं को नौकरी का फायदा होगा। सरकार अपने कार्यकाल के अंतिम वर्षों में नौकरियां निकालेगी और उसका हमें लाभ होगा। सचिन शर्मा के साथ मानवेन्द्रसिंह भाटी, गौरव प्रधान, दिलीपसिंह खंगारोत, रविन्द्र सैन आदि युवाओं ने समूह रूप में आपसी सहयोग से यह लड़ाई लड़ी। आज भी सचिन शर्मा महिला आरक्षण सहित आरक्षण व्यवस्था की अनेक विसंगतियों के खिलाफ संघर्ष की तैयारी कर रहे हैं। आवश्यकता है कि इस प्रकार का काम करने वाले सभी युवा एक समूह बनाएं एवं मिलकर संघर्ष करें ताकि कम समय में अधिक उपलब्धि हासिल कर सके।

प्रतिभाओं का हुआ सम्मान समारोह

आबूरोड : आबूरोड स्थित ब्रह्मा कुमारी संस्थान शांतिवन के कांफ्रेंस हॉल में 20 अगस्त को सिरोही का जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया जिसमें सिरोही जिले की 130 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। समारोह में पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह सिरोही, नारायणसिंह देवल विधायक, हमीरसिंह भायल विधायक, देवतसिंह सिरोही, पूर्व जिला प्रमुख चंदनसिंह देवड़ा, ब्रिगेडियर रणशेर सिंह मेवाड़, महंत भक्त वत्सल शरणजी, सिरोही सहकारी बैंक अध्यक्ष वीरभद्र सिंह रोहुआ सहित अनेक गणमान्य लोग अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। पूर्व नरेश ने प्रतिभाओं को समाज का गौरव बढ़ाने के लिए बधाई दी एवं शिक्षा के साथ संस्कारों को भी आवश्यक बताया। ब्रिगेडियर रणशेरसिंह ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रविष्ट होने पर बल दिया। समारोह का संयोजन ईश्वरसिंह किंवरली ने किया एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष का दायित्व हड़मतसिंह आमथला ने निभाया।

शिवगंज : सिरोही जिले के शिवगंज उपखण्ड मुख्यालय पर 27 अगस्त को राजपूत युवा परिषद शिवगंज सुमेरपुर द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया जिसमें राज्य स्तरीय प्रशासनिक सेवाओं एवं अन्य सेवाओं में चयनित समाज बंधुओं सहित 70 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। संत मीरा बाईसा के सानिध्य एवं हरिसिंह राठौड़ उपनिदेशक स्थानीय निकाय, गोविंदसिंह राणावत मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजसमंद, राजेन्द्रसिंह उपखण्ड अधिकारी जालोर, दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह, अजीतसिंह चाणौद आदि के आतिथ्य में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने सामाजिक भाव बनाए रखने, महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने एवं प्रतिभाओं के प्रोत्साहन हेतु इस प्रकार के आयोजन निरन्तर करने की बात कही। समारोह का संचालन परबतसिंह खिदारागांव व विक्रमसिंह बिरोलिया ने किया एवं मंगलाचरण प्रार्थना आदि नारायणसिंह खंदरा ने करवाई। महिपालसिंह कलापुरा, सुमेरसिंह पोमावा, कल्याणसिंह रुखाड़ा आदि ने आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राव जेताजी की जयंती मनाई

बगरी नगर। कस्बे के गढ़ में 24 अगस्त को प्रतिवर्ष की भांति वीर शिरोमणि राव जेताजी की 463वीं जयंती मनाई गई। समारोह में मुख्य अतिथि श्रीपाल सिंह शक्तावत ने सभी जातियों के सहयोग से आगे बढ़ने व अपराधियों का महिमामंडन नहीं करने की बात कही। पुष्कर के संत समताराम जी ने सभी की रक्षा करने को तत्पर रहने का आह्वान किया। इनके अतिरिक्त कुंवर पालसिंह मामावास, भगवतसिंह बगड़ी, अमरसिंह केलवाद, इन्द्रसिंह बागावास, रणजीतसिंह बीजागुडा, हनुमानसिंह खांगटा, विश्वप्रतापसिंह रेटा, सुरेन्द्रसिंह शेखावत, यशवर्द्धन सिंह शेखावत, नारायणसिंह आकड़ावास, राजेन्द्रसिंह भियाड आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता प्राप्त करने वालो को स्मृति चिन्ह व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मेवानगर की छतरियों का जीर्णोद्धार

बाड़मेर में बालोतरा के निकट मेवानगर में रावल दूदा, रावल तेजसी, रावल जगमाल द्वितीय एवं रावल भारमल की छतरियों का जीर्णोद्धार करवाया गया है। इस अवसर पर भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया एवं समारोह पूर्वक छतरियों पर नवनिर्मित मूर्तियों को स्थापित किया गया। राणी भटियाणी मंदिर संस्थान के अध्यक्ष रावल किशनसिंह ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुए बताया कि मालाणी की धरती पर हुए महापुरुषों ने सभी लोगों को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि इतिहास, संस्कृति, संस्कार आदि हमारे पुरखों की विरासत है इसे अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करना हमारा दायित्व है। इनके अलावा कनाना महंत परशुराम गिरि, परेऊ महंत ओंकार भारती, सिणली महंत शंकर भारती, जैन मुनि प्रद्युम्न विजय व सिणधरी रावल विक्रमसिंह आदि ने संबोधित किया। समारोह का संचालन चंदनसिंह चांदेसरा ने किया।

'अब लड़ें किताबों की लड़ाई'

खेतड़ी। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद विगत माह राज्य सरकार द्वारा जारी परिपत्र में आरक्षण व्यवस्था की विसंगति में कमी आई है। अब एक भर्ती में एक बार आरक्षण संबंधी विशेष सुविधा यथा उम्र में छूट, अंकों में छूट, न्यूनतम अर्हताओं में छूट आदि लेने वाले अभ्यर्थी को मेरिट में अनारक्षित वर्ग से अधिक अंक लाने के बाद भी आरक्षित वर्ग में ही गिना जाएगा। कोर्ट का यह फैसला ऐतिहासिक फैसला है और इससे हमारे अवसरों में वृद्धि होगी। अब हमें इन बढ़े हुए अवसरों का लाभ लेने के लिए आरक्षण की नहीं किताबों की लड़ाई लड़नी चाहिए। झुंझनूं जिले के खेतड़ी कस्बे में क्षत्रिय कल्याण समिति द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए यशवर्धनसिंह शेखावत ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने गैर सरकारी संगठन के प्रोजेक्ट का उदाहरण देते हुए बताया कि दिल्ली की झौपड़ पट्टी में रहने वाले गरीब बच्चों के एक समूह को उनके परिवार का झूठा इतिहास बताकर प्रोत्साहित किया गया और उसके कारण उत्पन्न हुए आत्मविश्वास व स्वाभिमान ने आशातीत परिणाम दिए तो हमारे पास तो गौरवमयी इतिहास की अटूट श्रृंखला है, उससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि सरकार ने 18 जिलों में सामान्य वर्ग के छात्रों के लिए छात्रावास स्वीकृत किए हैं। समाज कल्याण विभाग के सभी छात्रावासों में 15 प्रतिशत स्थान सामान्य वर्ग के लिए आरक्षित हैं एवं साथ ही सरकार आर.ए.एस. एवं आई.ए.एस. में प्रारंभिक परीक्षा पास करने वालों को डेढ़ लाख तक की छात्रवृत्ति देती है। हमें जागरुक रहकर इन सभी योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए। न्याय की लड़ाई एवं चरित्र बल के कारण हमारे पूर्वजों के साथ अधिसंख्यां समाज खड़ा रहता था, आज भी हमें संख्या बल की चिंता किए बिना न्याय के साथ खड़ा होना चाहिए। समारोह में अशोकसिंह, विक्रमसिंह, बजरंगसिंह, प्रहलादसिंह आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सभी ने एकजुट होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। समारोह में समाज की प्रतिभाओं व एच.सी.एल. के सेवानिवृत कर्मचारियों का सम्मान किया गया।

शक्तिधाम में स्नेहमिलन

गुजरात संभाग के स्वयंसेवकों का एक स्नेहमिलन 12 अगस्त को गुजरात के संघ कार्यालय 'शक्तिधाम' में रखा गया जिसमें वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा का सानिध्य मिला। 12 अगस्त को प्रातः जागरण से अपराह्न 3.00 बजे तक चले कार्यक्रम में प्रार्थना, यज्ञ, जप के साथ-साथ अजीतसिंह जी से आध्यात्मिक मार्गदर्शन भी मिला। अल्पाहार के पश्चात् 'संघ कार्य में बाधाएं' विषय पर चर्चा की गई जिसमें सभी स्वयंसेवकों ने अपने विचार रखे। भोजनोपरांत संभाग में होने वाले शिविरों के बारे में विस्तार से चर्चा कर उत्तरदायित्व सौंपा गया एवं अपराह्न 3 बजे समापन मंत्र के साथ विसर्जन हुआ।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org